विवेक दृष्टि

VIVEK DRISHTI

पूनम चन्द रतेरिया 'ऋषिपुत्र'

Poonam Chand Rateria 'Rishiputra'

© लेखक

द्वितीय संस्करण : मई 2001

प्रकाशक

सत्यम् सेवा केन्द्र
5, अब्दुल रसूल एवेन्यु
कलकत्ता – 700026
दूरभाष : 463-3885/87
ई-मेल : rishiputra@manaskriti.com
rishi@cal3.vsnl.net.in

मुद्रण

प्रिंटआर्ट
आनंदम्, रामराजातल्ला
हावड़ा – 711104

मूल्य : सद्भाव

VIVEK DRISHTI *by* Poonam Chand Rateria 'Rishiputra'

38

अपने परम प्रिय बाबा रतीराम जी
मानस गुरु स्वामी विवेकानंद
एवं
परम गुरु परमहंस सत्यानंद जी सरस्वती
के चरण-कमलों में सादर समर्पित

Dedicated at the lotus feet of
My beloved Grandfather Ratiram ji
Manas Guru Swami Vivekanand
and
Param Guru Paramhamsa Satyanand ji Saraswati

- यदि तुम्हारे जीवन में दुख आ पड़ा है
  तो खुश हो जाओ
- ईश्वर मेहरबान है तुम्हारे ऊपर
- बहुत कीमती ईनाम मिलने वाला है,
  यह जान कर रखना
- वह इतना कीमती होगा कि उसका
  अंदाज अभी तो तुम नहीं लगा सकोगे
- कारण, दुख भगवान का ही भेजा हुआ अग्रदूत है –
  यह बताने के लिए कि पीछे बहुत कीमती भेंट आ रही है
- प्रह्लाद, देवकी, भरत, विभीषण इत्यादि के जीवन बताते हैं कि
  भयानक दुखों से गुजरने के बाद ही उन्हें
  भगवत प्राप्ति संभव हो पाई थी।

- मनुष्य सारी जिन्दगी लड़ता है
  अपनी परिस्थिति सुधारने के लिए
- काश! थोड़ा प्रयास वह अपनी प्रकृति
  सुधारने के लिए करता
- यदि वह ऐसा करता
- तब परिस्थिति सुधरते देर नहीं लगती
- प्रकृति सुधरेगी सात्विक भोजन से
- प्रकृति सुधरेगी सत्संग, स्वाध्याय और मनन से
- और प्रकृति सुधरेगी
  योग के अभ्यास से
- जितना जो हो जाए।

- जो आदमी सब कुछ स्वीकार कर सके,
  वही समझदार है
- जो 'यह स्वीकार, वह अस्वीकार' का भाव रखता है,
  वह निश्चित ही नासमझ है
- वह काल और होनी को नहीं समझता है
- काल और होनी को समझने वाले राम ने
  कैकेयी का कभी बुरा नहीं माना
- काल और होनी यदि प्रबल नहीं होते तो
  कैकेयी का हमेशा का वात्सल्य भरा हृदय
  क्यों एक दिन इतना कुटिल और कठोर हो जाता
- समझदार व्यक्ति काल के इस कुचक्र को देख कर,
  उदासीनता का लबादा ओढ़ने में ही अपनी भलाई और सुरक्षा
  महसूस करते हैं तथा इस जीवन यात्रा में धीर गति से चल पाते है
- उदासीनता का यह नरम लबादा फिर उनके लिए एक
  अभेद्य कवच का सा काम करता है
- ऐसा आदि गुरु ने भी स्पष्ट कहा है।

- दुख आने पर दुख के साथ ज्यादा लड़ाई नहीं करनी चाहिए
- धैर्य अपनाना चाहिए
- दुख अपने समय से जाएगा
- सूर्योदय तो अपने समय से होगा ही
- जैसे कि रात को हम सो जाते हैं उसी प्रकार धैर्य की चादर ओढ़कर आए हुए दुख की ओर उदासीनता से उन्मुख होना चाहिए
- फिर ईश्वर का नाम लेकर, कछुवे की चाल से अपने से जो बन पड़े उसमें लग जाना तथा लगे रहना चाहिए
- हम देखेंगे कि दुख भागता नजर आएगा
- जैसे कि सो जाने पर फिर सुबह की लाली फूटती ही नजर आती है।

- शिकायत का भाव तो रखना ही नहीं चाहिए
- न परिस्थिति से
- न लोगों से
- और न अपने आप से
- परिस्थिति से शिकायत करने वाले का विधाता से द्रोह हो जाता है
- लोगों से शिकायत रखने वाला लोगों में अप्रिय हो जाता है
- और अपने आप से शिकायत रखने वाला आत्मघाती ही होता है
- शिकायत रूपी राक्षस उसकी सारी मानसिक शक्ति चट कर जाता है
- शिकायत करने वाला आदमी ईश्वर और दुनिया के दरबार में द्रोही तथा अपने मन के दरबार में आत्मघाती साबित होतां है।

- देनदार प्रारब्ध है
- वह जो देता है उसी में संतोष मान कर चल
- तेरे से जो बन पड़े वह तू जरूर करता चल
- ज्यादा दे तो त्याग कर
- कम दे तो तपस्या
- दुनिया उसकी चाकर है, वह कुछ नहीं दे सकती
- भोजन का हर निवाला वह दे रहा है
- जो प्रारब्ध दे उसी में संतोष कर
- कर, कर, कर, कर मेरे भाई!
- संतोष का पाठ सबसे बड़ा पाठ है।

- कल क्या हो जाएगा
- कल के लिए किसकी प्रतीक्षा कर रहे हो
- कल आकर कौन सहारा दे देगा
- आज यदि हम अपने पुरुषार्थ से अपनी बुद्धि को सबल तथा शरीर को कष्ट उठाने का आदी नहीं बनाते हैं
- तो कल हमें घोर कष्ट उठाना ही पड़ेगा
- इस जंगल में कोई भी सहारा देने वाला नहीं है
- कष्ट के मौके पर सब असहाय नजर आएंगे
- कष्ट तो अकेले ही उठाना पड़ेगा
- इसलिए बुद्धिबल बढ़ा, आवश्यकताओं को कम कर तथा कष्ट उठाने का आदी बन
- और तपस्या किए जा।

- दुनिया में सम्मान का मिलना, प्यार का मिलना,
  धन का मिलना, सफलता का मिलना
- ये सब माया रूपी साकी की शराब हैं
- ये मुमुक्षु व्यक्ति को मदहोश करके उसकी
  सबसे कीमती चीज विवेक को उससे हर लेती है
- और उसे इस जग में निर्धन अकेला छोड़ देती है
  अनंत काल तक भटकने के लिए
- अतएव असम्मान, अपमान, निर्धनता तथा
  असफलता को प्रभु का आशीर्वाद ही समझना चाहिए
- कारण, मुमुक्षु की विवेक-निधि इनसे सुरक्षित रहती है।

- संचय और भोग के पीछे
  मृत्यु का भयानक अट्टहास करता चेहरा है
- तथा त्याग और संतोष के मार्ग के अंत में
  अमरता का अकंपित दीपक प्रज्वलित है
- अतएव हे मानव! यदि तुम मृत्यु की
  इस विभीषिका को ठेंगा दिखाना चाहते हो
- तो त्याग और संतोष के मार्ग पर चलो
- चलते रहो, चलते रहो
- एक दिन अमरता की वह कांति
  तुम्हारे हृदय में निश्चय ही स्थापित होगी।

- तुम यह क्यों सोचते हो कि
  तुमको यह करना पड़ेगा, वह करना पड़ेगा
  और कैसे होगा यह सब
- अरे पगले! भगवान तुम्हारे सामने चलते हुए
  तुम्हारा सारा काम जो कर रहे हैं
- तुम तो उनकी छाया की तरह
  काम करते-से दिख रहे हो
- भला छाया को भी कोई काम करना होता है,
  उसे कोई थकावट होती है
- महाभारत वाले युद्ध में भी अर्जुन युद्ध की
  भयानकता को देखकर घबरा गया था
- उसके हाथ से धनुष छूट गया था, गला सूख गया था
  तथा वह पगला गया था
- यह छाया वाली बात समझकर ही
  वह गांडीव फिर से उठा पाया था!

- जिन्दगी महज चार कदम की यात्रा है
- दो कदम तो तुम 'मैं-मेरा-मेरी' कह कर जी लिए
- क्या पाया सोचो?
- अब दो कदम 'तू-तेरा-तेरी' कह करके जी के देखो
- न हो तो एक परीक्षण करके देख लो
- एक रुपये में एक पैसा करके देख लो
- मजा आ जाए तो दो पैसा कर देना
- जिस रोज पूरा एक रुपया हो जाए
  उस रोज समझ लेना कि यही कर्म योग है।

- यह संसार जीव को बरगलाने के लिए एक अच्छा शक्तिशाली तमाशा है
- बार-बार जीव यहां आता है
- खाली हाथ आता है, खाली हाथ जाता है
- पर जीवन भर मुट्ठी बंद करने की मूर्खतापूर्ण कोशिश करता रहता है
- जीवन भर संसार के प्यार को पाने का मूर्खतापूर्ण प्रयास करता रहता है
- तथा असंभव को संभव करने के इस प्रयास में अपना जीवन बरबाद करता है तथा एक नए जीवन की शुरुआत के बीज बो कर ही यहां से प्रयाण करता है
- संसार मरुभूमि का जल है जिसका अस्तित्व नहीं
- संसार रस्सी में का सांप है जिसका अस्तित्व नहीं
- संसार को अपनाने का विचार त्याग
- हां रे मूर्ख! अब भी त्याग
- और कठोर आहार संयम, स्वाध्याय और यथासंभव साधना के सेवन से सात्विक मन प्राप्त कर
- वही बेड़ा पार लगाएगा
- यही पुरुषार्थ है
- या यूं कहो कि यही परम पुरुषार्थ है!

- आदमी अपनी बुद्धि से चलता है तथा आदमी की बुद्धि को काल चलाता है
- कभी उलटी तो कभी सुलटी
- ऐसा नहीं होता तो क्यों युधिष्ठिर जुआ खेलने बैठता, क्यों द्रौपदी को हारता, क्यों अपने भाइयों को हारता और यहां तक कि अपने को हार बैठता
- बुद्धिमान आदमी काल की इस उलटी-सुलटी चाल देखकर और काल को महाबली जानकर कुछ हर्ष-अमर्ष नहीं करते
- फिर वे अच्छे-बुरे का चश्मा अपने ऊपर से उतार कर उसे काल को ही पहना कर अपनी आंखें इस अच्छे-बुरे से मूंद लेते हैं।

- जो लोग तुम्हारे आसपास हैं,
  वे सब काल के प्रतिनिधि हैं
- काल ने उन सबको सजा रखा है तुम्हारे इर्द-गिर्द
  उन्हें अपना महत अधिकार देकर,
  तुम्हें तुम्हारा कर्मफल भुगतवाने के लिए
- कबीर कहा करते थे –
  'बंदा हुकुम पहचान'
- तो भाई मेरे ! जो तुम्हारे चारों ओर हो रहा है
  उसके पीछे काल के हुकुम को पहचानो
- और काल के इन बंदों के सामने अपना माथा झुकाओ
- समझ आ गई हो
  तो हो जा नतमस्तक
- और कहता चल –
  'तेरी ही रजा मेरे मालिक, तेरी ही रजा'
- जीसस कहा करते थे चलते-चलते –
  'हे प्रभु ! तेरी ही इच्छा पूरी हो'
- सूली पर चढ़ने को भी उन्होंने उसकी इच्छा माना था।

- जब संदेह का सांप सिर उठाता है
- तो अमृत भी जहर लगता है
- जब श्रद्धा जगती है
- तो पत्थर भी भगवान हो जाते हैं।

- जो होना होता है
- वह होता ही है
- जो होना नहीं होता है
  वह नहीं ही होता है
- इसलिए जो होता है
  उसे होनी ही समझ
- और समझ कर
  स्वीकार कर
- और स्वीकार करके अपना काम किए जा।

- मुंह के अंदर जो डालते हो
- तथा मुंह से बाहर जो निकालते हो
- दोनों में बहुत ध्यान देने की दरकार है।

- इच्छाओं की पूर्ति करते चले जाओ
- तो असंतोष भी बढ़ता चला जाएगा
- असंतोष बढ़ेगा तो क्रोध भी आएगा
- क्रोध आएगा तो लोगों में अप्रिय बनोगे
- इच्छाओं की पूर्ति को नकारो
- शुरू-शुरू में कुछ तकलीफ होगी
- लेकिन धीरे-धीरे संतोष बढ़ता चला जाएगा
- और जीवन में सुख आने लग जाएगा।

- जिसके पास धन हो जाता है
  दुनिया उसको बुद्धिमान समझती है
- और वह उसी भ्रम में अंधा हो जाता है
- बुद्धिमान वही है जो धन नहीं, सत्कर्म रूपी
  धन को इकट्ठा करने में जी-जान से लगा रहता है
- उसके लिए फिर धन साध्य नहीं, साधन मात्र होता है
  जिसे प्रभु सत्कर्म हेतु उसे देते हैं।

- जो आदमी तुम्हें अच्छी चीज देता है
- उसको दिल से धन्यवाद दो
- इससे अच्छी चीजों के मिलने का क्रम बना रहेगा
- जो आदमी हमें बुरी चीज देता है
- उसके सामने चुप ही रहो
- कारण अच्छे-बुरे का हमें ज्ञान ही कितना है!

- वर्तमान के क्षण में आ जाओ
- बुला लो अपने मित्र धैर्य को अपने पास
- और बुला लो अपने परम मित्र विवेक को भी
- और फिर उद्योगरूपी अपने मंत्री के
  हाथ में बागडोर दे दो
- भूल जाओ भूतकाल और भूल जाओ भविष्य को भी
- इतना बस कर लो तो जीवन आनंद से भर जाएगा।

- मूर्ख आदमी अपनी शक्ति को पहचाने बिना
  क्रोध करता है और नष्ट हो जाता है
- समझदार आदमी अपनी शक्ति को
  तौल कर क्रोध करता है
- विवेकी क्रोध नहीं करता
- और संत तो चन्द्रमा की तरह शीतल रहता है।

- आदमी दुनिया का मालिक
  बनने के प्रयास में
- दुनिया का दास बनता
  चला जाता है

- सामने तीन रास्ते नजर आएंगे
- सरल रास्ता चुनने पर तो हम दुर्बल
  और मूर्ख ही रह जाएंगे
- यदि कठिन रास्ता चुनने की हिम्मत हो तो जान लेना कि
  उसमें ही ज्ञान और शक्ति छिपी है
- अन्यथा मध्यम तो चुनना ही चाहिए
- धीरे-धीरे सरल से मध्यम और मध्यम से
  कठिन का अभ्यास डालना चाहिए
- ईश्वर अपनी उस संतान को, जो 10 पैसा साहस जुटाता है,
  फिर 90 पैसे साहस का वरदान देते ही हैं।

- काल तुमको धीरे-धीरे चिता की
  लकड़ियों की ओर खींचे लिए जा रहा है
- यदि शरीर को कष्ट की आदत नहीं होगी
- तो वे लकड़ियाँ तुम्हें बहुत गड़ेंगी।

- समझ की कमी तथा शक्ति की कमी
  ये ही समस्या के कारण हैं
- इन दोनों को बढ़ाने से
  एक रुपया समस्या एक पैसा बन जाती है
- अतएव समझ और शक्ति को
  बढ़ाने का प्रयास करो
- समस्या को सुलझाने का यही श्रेष्ठ उपाय है।

- जो तुम दूसरों को दोगे
- वह हजार गुना होकर
  तुम्हें वापस मिलेगा।

- तुमको जो मिलना है, वह तुमको
  अपने प्रारब्ध से मिल ही जाएगा
  दूसरा उसमें असहाय ही साबित होगा
- ऐसा ही जब है
- तो तुम क्यों नहीं अपनी मीठी वाणी
  से दूसरों को प्रसन्न करते हो
- दूसरे ने तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ा
- एक मीठी वाणी अपने आप में
  बहुत बड़ी सेवा है।

- मारने वाला भी उसका भेजा हुआ
- प्यार देने वाला भी उसका भेजा हुआ
- किसको आंख दिखाऊं?
- किसको माला पहनाऊं?

- तीन चौथाई शरीर को
  काल ने निगल लिया है
- और एक चौथाई को संसार ने
  पकड़ रखा है
- रेशमी कपड़ों से सजा कर
  उस पर इत्र-फुलेल छिड़क रहा है
- क्या बोलें भाई इस नासमझी पर!

- भूतकाल की याद मन को
  तामसिक बना देती है
- और भविष्य की कल्पना राजसिक
- वर्तमान का क्षण ही मन को
  सात्विकता का आनन्द दे सकता है।

- यदि तुम कोई जरूरी काम करना चाहते हो
- और वह हो ही नहीं पा रहा है
- तो उसका तरीका यह है कि
  यदि वह काम 100 पैसे समय और मेहनत का है
- तो कोशिश करो कि आज और अभी
  एक पैसा या आधा पैसा ही कर डालो
- तुम देखोगे कि वह काम बहुत शीघ्र ही
  खतम होता नजर आएगा
- मंजिल की ओर उठा हुआ पहला कदम
  बस समझ लो कि मंजिल तक शीघ्र पंहुचाता ही है।

- जो छूटता है उसे छूटने दो
- कारण, छूट कर उसके बाद
  जो हाथ में आएगा
- वह उससे कहीं अधिक कीमती होगा।

- जली-भुनी, जहर से भरी
  अपमान की छुरी जब चलती है
- तो बड़ी वेदना होती है
- पर बाद में यही जहर, जहर को काटता है
- मोह रूपी जहर को
- मोह से बढ़कर और कौन-सा जहर है
- इसलिए अपने अंदर की सफाई के लिए इस
  छुरी को सहर्ष अपने ऊपर चलने दो
- चलने दो।

- मदद तो तभी मिलती है
  जब समर्पण होता है
- ईश्वर से भी
- सबल मित्र से भी
- कोई अपवाद नहीं है।

- बात खुलासा होने के डर से
  हम बात का खुलासा नहीं करते हैं
  तथा जीवन भर अंधेरे में रहते हैं
- खुलासा होने से बात यदि तुम्हारे अनुकूल होती है
  तो अच्छा ही है
- और यदि तुम्हारे विपरीत होती है
  तो और भी अच्छा है
- कम से कम मन तो मुक्त होगा
- और मन की मुक्ति से कीमती चीज
  भला और क्या हो सकती है?

- राजसिक व्यक्ति से काम समझा-बुझाकर लेना चाहिए
- तामसिक व्यक्ति को ठेलकर
- तथा सात्विक के चरणों में बैठकर।

- एक होता है दुनिया का पट्टा
- एक होता है प्रारब्ध का पट्टा
- प्रारब्ध के पट्टे पर 'नहीं' लिखा रहने पर
  दुनिया का पट्टा क्या काम आएगा
- दुनिया के पट्टे में चीज हमारे नाम पर है
- पर भोग कोई और रहा होता है
- इस प्रकार बुद्धिमान मनुष्य प्रारब्ध के पट्टे को
  समझ कर सुख-दुख में अविचलित रहता है
- यहां मेरा-मेरी कुछ नहीं
- संसार का मालिक तो यह प्रारब्ध ही है।

- जो छूट गया, जो छूट गई
- उन्हें काल ने निगल लिया
- काल का सब पर अधिकार है
- छूटे को याद करोगे तो काल
  तुम पर क्रोधित होगा
- उसे तुरंत भूलो
- जो हाथ में आया है अथवा है
  पहले उसे सिर माथे लगाओ
- फिर उसे देखो
- और उसे लेकर आगे बढ़ो
- बुजुर्ग कह गए हैं –
  'जो बिंध गए सो मोती।'

- अपमान अमृत है
- अपमान शक्ति को जगाता है
- सम्मान से आखें मुंदती हैं
- तथा अपमान मिलने पर ही आँखें खुलती हैं
- इसलिए पिता की जब हम पर स्नेह भरी दृष्टि पड़ती है तो वे अपमान ही भेजते हैं।

- भूत और भविष्य के विचार-राक्षस पूरा प्रयास करेंगे तुम्हें अपनी ओर खींचने का
- लेकिन, खबरदार ! उनको मन दिया तो वे तुम्हारी शक्ति चूसकर तुम्हें अधमरा करके छोड़ देंगे
- वर्तमान रूपी अमृत-क्षण को छोड़कर कभी मत हटना
- नहीं तो बेमौत मारे जाओगे
- वर्तमान रूपी अमृत-क्षण से चिपककर विचारपूर्वक कार्यशील बने रहना।

- हर व्यक्ति अतृप्त है
- हर व्यक्ति असुरक्षा की भावना से ग्रस्त है
- वह तृप्ति और सुरक्षा संसार में खोज रहा है
- यही उसका अज्ञान है
- यह प्रयास उसका रेत में फूल उगाने के समान है
- तृप्ति अंदर है
- सुरक्षा अंदर है
- 'कस्तूरी कुंडल बसे, मृग ढूंढ़े जग मांहि'
- अंदर जाओ
- उसके लिए बाहर को छोड़ना होगा
- बाहर को पकड़े-पकड़े अंदर कैसे जाओगे
- बाहर को छोड़ना यानी त्याग और वैराग्य
- और अंदर जाना अर्थात योग।

- इन्द्रिय-सुख और ध्यान-सुख
  दोनों एक साथ नहीं मिल सकते
- एक को छोड़ोगे तो दूसरा मिलेगा
- एक मृत्यु के दरवाजे तक पहुंचाता है
- तो दूसरा अमरता के द्वार तक।

- तूफानी रात में सुरक्षित बंद किले से
  कौन मूर्ख निकलेगा
- वर्तमान रूपी बंद सुरक्षित किले
  से निकलना भी उसी प्रकार एक मूर्खता ही होगी
- भूत-भविष्य के विचार की तूफानी हवाएं बह रही हैं
- एक विशाल लकड़ी के लट्ठे से चिपककर बहते हुए
  मनुष्य का मन क्या उस लट्ठे को छोड़ना चाहेगा
- वह तो उससे चिपका ही रहेगा
- वैसे ही वर्तमान रूपी लकड़ी के लट्ठे
  से ही चिपके रहना चाहिए
- भूत-भविष्य के विचारों का प्रवाह भयंकर है!

- जिन्होंने साधना करके अपनी
  मानसिक शक्ति को बढ़ाया है
- जिन्होंने स्वाध्याय, मनन और सत्संग करके
  विवेक को जगाया है
- श्रद्धारूपी फूल खिलाए हैं
- संतोषरूपी धन पाया है
- वे ही बादशाह हैं
- बाकी सब तो भिखारी हैं।

- संतोषी व्यक्ति को अपनी संपत्ति
  हर समय बढ़ती नजर आती है
- अतः वह प्रसन्न और शांत रहता है
- असंतोषी को अपनी संपत्ति हर समय
  कम नजर आती है
- इसलिए वह हर समय अप्रसन्न तथा
  अशांत बना रहता है, दुखी रहता है
- मनुष्य का सबसे बड़ा धन तो संतोष ही है।

- यहां पर हर कोई एक सौदागर है
- देखना यह है कि वह किस चीज का सौदा कर रहा है
- नश्वर चीजों का
- या नश्वर चीजें देकर शाश्वत चीजों का।

- जैसे-जैसे आदमी के मन का संयम कम होता है
- वैसे-वैसे वह दूसरों में दोष देखने लगता है
- उसकी दोष-दृष्टि बढ़ने लगती है
- और फिर वह सबका अप्रिय हो जाता है
- और जैसे-जैसे आदमी का अपने पर
  संयम बढ़ता जाता है
- वैसे-वैसे उसे दूसरों में दोष दिखाई देने
  बंद होते जाते हैं
- वह गुण-दृष्टि अपनाने लगता है
- तथा वह सबका प्रियजन बनता जाता है।

- मन ही मन दूसरों को दोष देते रहने से
  आदमी की अपनी प्रगति रुक जाती है
- इस प्रकार वह निठल्ले होने का रास्ता खोज लेता है।

- अपनी आदतें बिगाड़ लो
- एक दिन बिगड़े दोस्तों की संगति की तरह
  तुम उन बिगड़ी आदतों के साथ
  अपने को अकेला पाओगे
- और फिर क्या होगा?
- घोर कष्ट
- अपनी आदतें सुधार लो
- एक दिन वे अच्छे दोस्तों की तरह
  तुम्हारे साथी बनेंगी
- तुम्हें बहुत सुख देंगी।

- अप्रीतिकारक परिस्थिति से अप्रीति हटा दो
- तो वह मंगलदायक हो जाएगी
- प्रीतिकारक परिस्थिति से प्रीति हटा दो
- तो वह मंगलदायक हो जाएगी।

- यदि कोई तुम्हें अच्छी चीज देता है
- तो देने वाले की बार-बार तारीफ करो
- अच्छी चीज देने का क्रम बना रहेगा
- वह अच्छी चीजों के ढेर लगा देगा तुम्हारे चारों ओर
- कुछ बरत लो, बाकी बांट दो
- लेने वाले तुम्हें घेरे रहेंगे और प्यार भरी दृष्टि से देखेंगे
- इस प्रकार तुम अच्छी चीज पाने और बांटने के माध्यम बन जाओगे
- और जीवन में सुगंध आ जाएगी।

- भगवान कृष्ण ने कहा : अर्जुन!
  ये सब तो मरे ही पड़े हैं, अब इन मरों को मारने में
  तेरा क्या तो कर्तृत्व है और क्या शक्ति!
- तेरा बाण उनकी छाती पर लगेगा तो जरूर,
  पर काल उस समय प्रारब्ध के अनुसार
  उनके प्राण को निकाल रहा होगा
- तू क्या समझता है कि तेरे बाण से उनके प्राण गए!
- कठपुतली ने हाथ ऊपर उठाकर सलाम किया
  और तुम खुश हो गए!
- कठपुतली ने क्रोध में तुम्हारी ओर देखा
  और तुम क्रोधित हो गए!
- कारण, कठपुतली की डोर तुमको दिख नहीं रही
- जिस रोज वह तुमको दिख जाएगी,
  उस दिन तुम क्रोध और प्रसन्नता
  दोनों को छोड़कर सम हो जाओगे।

- इंद्रिय सुख पाने की कल्पना तथा प्रयास में
  इंद्रिय सुख मिलेगा ही, यह जरूरी नहीं है
- लेकिन इसकी कल्पना मनुष्य को दीन बना देती है
- उसका प्रयास मनुष्य को थकान तथा झंझटों से भर देता है
- तथा उसका सेवन तो मनुष्य को हीन ही बना देता है
- सारा धन लूट कर पथ-पथ का भिखारी बना देता है
- इंद्रिय सुख की कल्पना का त्याग, उसको पाने के
  प्रयास का त्याग तथा उसके सेवन के त्याग से ही
  मनुष्य का आध्यात्मिक जीवन टिक सकता है
- अन्यथा मनुष्य इस संसार सागर में ही डूब जाता है
- इंद्रिय-संयम के बिना कोई भी आध्यात्मिक प्रगति संभव नहीं।

- प्रारब्ध अपनी डोर से बांध कर कठपुतली
  की तरह हम सब को नचा रहा है
- यदि दोष देना है तो ऊपर बैठा जो नचा रहा है उसको दो,
  बगल वाली कठपुतली को दोष देना गलत है
- और नचाने वाले को दोष देकर क्या पाओगे–
  खीज, निराशा, बीमारी और अवसाद
- तो फिर क्यों न हँसकर नाचना सीखते
  कम से कम खीज से बचोगे, निराशा से बचोगे
  अवसाद से बचोगे, बीमारी से बचोगे
- और जब हँसकर ही नाचने लगे
  तो फिर क्या पाना - होना बाकी रहा
- सीताराम, सीताराम, सीताराम कहिए
  जाहि बिधि राखे राम ताहि विधि रहिए।

- संसार की कोई भी चीज
  या तो जल्दी हाथ नहीं लगती
- और यदि हाथ लग भी जाती है
- तो उसे खोने का भय बना रहता है
- खोने का वह भय मुनष्य को अन्दर से खोखला कर देता है।

- लोभी आदमी को दुनिया अपना दुश्मन बना लेती है
- लोभी आदमी अंत में अकेला रह जाता है
- लोभी आदमी न करने योग्य कार्य कर बैठता है,
  तरह-तरह की विपत्ति में फंस जाता है
- लोभी आदमी तरह-तरह के तनावों से ग्रस्त रहता है,
  वह किसी का भी विश्वास नहीं कर सकता
- उसे तरह-तरह की बीमारियाँ पकड़ लेती हैं
- इसलिए लोभ से हमेशा दूर रहना
- परोपकार, स्वाध्याय, सत्संग लोभ की अचूक दवाएं हैं।

- जो अपने को सुधारने के काम में लगा है
- वही सही पुरुषार्थी है
- वही मुमुक्षु है, वही ज्ञानी है
  और ज्ञान प्राप्त करने का अधिकारी है
- जो दूसरों को सुधारने के काम में लगा है
  वह अज्ञानी है, स्वार्थी है और पाखंडी है
- यह उसका दो रोटी की व्यवस्था का ही काम है।

- जो होनी होती है उसको तुम रोक नहीं सकते,
  उसकी क्षमता तुममें नहीं है
- अतएव ऐसा ही करते रहें जिससे संतोष
  और धैर्य मिले, शांति और सही समझ प्राप्त हो
- और ये सब प्राप्त होंगे, स्वाध्याय से
  मनन से, सत्संग से
- और किसी से नहीं
- प्रारब्ध को स्वीकार करके उसे अपना दास बनाओ
- न कि उसे अस्वीकार करके तुम उसके दास बनो।

- जो जैसा है, अपने कर्मों से है
- तुम्हारे कर्मों से नहीं है
- उसकी चिंता-विचार छोड़ो
- और अपना जीवन जीने में लगो
- अपने विचार, अपने कर्म सुधारने में लगो।

- एक है मनोरंजन तो एक है मनोसंयम
- दोनों विपरीत चीजें हैं
- एक अतृप्ति का मार्ग है तो दूसरा महान तृप्ति का मार्ग
- पहला बंधन में डाल कर जनम-जनम छकाता है
- तो दूसरा परम तृप्ति देकर मुक्ति तक पहुंचाता है
- मनोसंयम में जिसका मनोरंजन होने लग जाए
- फिर उसके तो दो के एक हो गए
- और फिर सारे द्वंद्व-झगड़े खतम होकर
  उसका तो बेड़ा पार ही हो गया समझो।

- जो व्यक्ति जितना अधिक मेरा-मेरी
  कहता तथा करता है
- दुनिया तथा ईश्वर उसे उतना ही अधिक
  अपने से परे ढकेल देते हैं
- जो व्यक्ति जितना अधिक अपना-अपनी कहता है, करता है
  दुनिया में वह उतना ही लोकप्रिय होता है
- तथा जो व्यक्ति जितना अधिक तेरा-तेरी कहता तथा करता है
- उसको तो दुनिया अपना आत्मा ही बना लेती
  है तथा वह ईश्वर का भी प्यारा होता है।

- किसी को न्याय दिलाने वाले तुम कौन?
- न्याय-अन्याय का ज्ञान तुममें है क्या?
- हर मनुष्य को अपने कर्म का ही फल मिलता है
- इसलिए न्याय दिलाने वाले तुम नहीं हो सकते
- हां, सेवा का अवसर हो तो अपनी शक्ति भर
  वह अवश्य कर देनी चाहिए।

- दुख की बात यह है कि
  इस देश की मुद्रा उस परलोक में चलती नहीं है
- वहां के लिए इस मुद्रा को बदलने का
  एक ही रास्ता है
- वह है दान-पुण्य का
- वह है परोपकार का
- वह है सेवा का।

- दुनिया की दया पर जीवन नहीं चलता है
- जीवन चलता है अपनी बुद्धि से
- जीवन चलता है अपने पुरुषार्थ से
- अपनी बुद्धि और अपने प्रयास से रोजी-रोटी कमा
- संतोष धारण कर और अपने आप से कह
- रूखी-सूखी खाय के ठंडा पानी पी
  देख पराई चोपड़ी मत ललचावे जी।

- अपना प्रयत्न सर्वोपरि है
- जिस काम को तुम आज नहीं कर पा रहे हो
  वह क्या कल हो पाएगा
- जो अच्छा काम तुम कल करने की सोचते हो
  उसको आज ही करो
- यह प्रगति की सीढ़ी है
- आज क्या संभव है,
  आज कितना संभव है,
  इसका हर समय विचार रहना चाहिए
  तथा जी-जान से प्रयास रहना चाहिए
- यह मानकर चलो कि कल हम नहीं ही रहेंगे
- इसलिए आज जो हो गया वह हमारा
- कल की राम जानें!

- आज की समस्या को हल करने के प्रयास में
- तुम्हें जो ज्ञान प्राप्त होगा
- तुम्हें जो शक्ति प्राप्त होगी
- उसकी भविष्य में तुमको बहुत आवश्यकता पड़ने वाली है
- इसलिए आज की समस्या के माध्यम से प्रारब्ध
  तुम्हें भविष्य संभालने के लिए तैयार कर रहा है।

- जो दुख में साथ दे
  सुख में जिसका अता-पता नहीं
  वह तो है ईश्वर
- जो सुख तथा दुख दोनों में साथ दे
  वह है मित्र
- जो केवल सुख में साथ दे
  वह है स्वार्थी
- ईश्वर का साथ तो केवल दुख में मिलता है
- इसीलिए कुंती ने दुख मांगा था।

- दूसरे किसी भी आदमी पर निर्भर मत रहो
- जब दूसरे आदमी को यह पता चलता है
  कि हम उस पर निर्भर हैं
- उस समय वह हमारी इस कमजोरी का लाभ उठाता है
- या फिर वह हमसे दूर चला जाता है
- अतएव, अपना काम अपने हाथ
- अपना हाथ जगन्नाथ!

- मूर्ख आदमी की मूर्खता को देखकर
  यदि तुम्हें क्रोध आता है
- तो यह तुम्हारी बहुत बड़ी मूर्खता है
- कारण, तुमने मुर्ख से बुद्धिमानी की आशा की थी
- भला मूर्ख से बुद्धिमानी की आशा कौन-सी बुद्धिमानी है
- मूर्ख की मूर्खता का उत्तर
  या तो उदासीनता है या करुणा
- क्रोध नहीं।

- अस्वस्थता, असम्मान, असफलता, गरीबी –
  इनसे बुरा क्या हो सकता है
- पर ये विवेक को जगाने में मदद करते हैं
- तथा इनके रहने से विवेक जगा भी रहता है
- इसलिए ये तो वरदान स्वरूप ही होते हैं।

- बुद्धिमान व्यक्ति के कार्य
  दूसरों के कार्य पर निर्भर नहीं रहते
- चूंकि उनके जीवन का लक्ष्य स्पष्ट रहता है
  इसलिए वे शनैः-शनैः अबाध गति से
  अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होते रहते हैं
- दूसरे व्यक्ति के कार्य अथवा कथन
  उनमें कोई फर्क नहीं ला सकते
- न वे दूसरे व्यक्ति के कार्य अथवा कथन की
  प्रतीक्षा ही करते हैं।

- जैसे एक चतुर मंत्री राजा के लिए
  तथा राज्य के लिए बहुत उपयोगी होता है
- जैसे एक विश्वस्त और होशियार मुनीम
  एक व्यापारी के लिए बहुत आवश्यक होता है
- जैसे एक आज्ञाकारी, बुद्धिमान और शक्तिशाली पुत्र
  एक पिता के लिए बहुत बड़ा आसरा और सहारा होता है
- उसी प्रकार मुमुक्षु के लिए सात्विकी बुद्धि ही उसकी एकमात्र
  धरोहर होती है, एक आसरा या सहारा होती है
- आपत्ति में मंत्री, मुनीम, पुत्र सब छोड़ जा सकते हैं
  पर सात्विकी बुद्धि नहीं
- यह बात मुमुक्षु अच्छी तरह समझता है
- सात्विकी बुद्धि मिल गई तो बस सब कुछ मिल गया
  ऐसा मुमुक्षु मानता है
- तथा सात्विकी बुद्धि प्राप्त करने का मुमुक्षु पूरा
  प्रयास करता है
- आहार-संयम, स्वाध्याय, सत्संग और मनन द्वारा तथा
  दीर्घ काल की सतत साधना के द्वारा।

- संसारी संसार-सागर में
  डुबकी लगाकर 'आह-आह' करता है
- मुमुक्षु योग-सागर में डुबकी लगाकर
  'अहो-अहो' करता है
- अनंतकाल से यह आह चल रही है
- हे मानव! इस 'अहो' को पकड़कर
  अब तू इस 'आह' का अंत कर!

- वाद-विवाद मूर्खता का काम है
- सत्संग बुद्धिमानी का
- दोनों में जमीन आसमान का अंतर है
- सत्संग से बुद्धि परिपक्व होती है तथा सत्संग विवेक को
  जगाकर, जाग्रत विवेक की उपलब्धि कराता है
- वाद-विवाद तो शक्ति तथा जीवन का अपव्यय ही है
- वाद-विवाद जहां दिखे, वहां से सटक जाना चाहिए
- तथा जहां सत्संग होता दिखे वहां सत्संग करते लोगों
  के चरणों में बैठकर कान और हृदय दोनों को खोल देना चाहिए।

- मैं दुखी हूँ
- कोई आकर मेरा दुख दूर कर दे
- ऐसा सोचते रहोगे तो जिंदगी तो बीत ही जाएगी
- और दुख का बोझ बढ़ता ही चला जाएगा
- यदि तुम सचमुच ही अपने दुख की दवा करना
  चाहते हो तो
- आसपास ही नजर दौड़ाओ और देखो कि कोई
  दुखी नजर आ रहा है क्या?
- बस लग जाओ उसके दुंख दूर करने में
- और फिर तुम देखोगे कि तुम्हारा दामन
  खुशियों से भरता ही चला जाएगा।

- हर आदमी को अपनी यात्रा खुद करनी होती है
- हर आदमी को अपने ही पैरों पर चलना होता है
- दूसरों के कंधों पर यात्रा संभव नहीं
- दूसरे आदमी उतार फेकेंगे तुम्हें
- इसलिए चिता तक तुम्हें खुद ही पैदल
  चल कर जाना होगा, किसी के कंधों पर नहीं
- कोई साथ नहीं देगा
- कुछ साथ नहीं जाएगा
- शरीर तक का साथ छूट जाएगा
- केवल धर्म साथ जाएगा
- अतएव धर्म का पालन करो
- शरीर को स्वस्थ रखो
- तथा परोपकार करो
- ऐसा करने से तुम्हारे
  इहलोक और परलोक दोनों सुधरेंगे।

- जो आदमी अपने को उठाने की कोशिश
  करता है वह गिरता भी है
- गिरना और उठना यह चलता ही है
- इसको देखकर दुनिया हँसी उड़ाती है
- तो क्या हम उठने का प्रयास न करें
- दुनिया की हँसी देखकर
  उठने का प्रयास न करना कायरता का काम है
  आत्महत्या के तुल्य है
- धीरे-धीरे गिरना-पड़ना कम होगा
  और हम खड़े होकर चलने लगेंगे
- यह प्रयास ही तो जीवन को सार्थक बनाएगा
- इसी प्रयास का नाम जीवन है
- स्वामी विवेकानंद ने यह कहा था।

- जो जरूरी काम है उसे कल पर मत टालो
- ऐसा पूरा प्रयास करो कि वह आज ही हो जाए
- इससे विकास होता है
- आदमी आगे बढ़ता है
- शक्ति बढ़ती है
- प्रसन्नता बढ़ती है
- इहलोक सुधरता है
- और श्रेय के पुजारी के दिल की हर धड़कन उसे कहती रहती है।
  'काल करे सो आज कर आज करे सो अब
  पल में परलय होएगी बहुरि करेगा कब'
- उसे चैन ही कहां कि वह आज का काम कल पर टाले!

- दूसरों को सुधारने की जिम्मेदारी
  तुम्हारी नहीं है
- तुम्हारा पुरुषार्थ-क्षेत्र है –
  अपने को सुधारना, अपनी प्रकृति को सुधारना
- दूसरों को सुधारने के लिए ज्ञान बघारने के बदले
  यदि तुम थोड़ा-सा अपने को सुधार कर दूसरों को दिखाओ
  तो वह ज्यादा असर करेगा
- अपने को सुधारने की महती आवश्यकता
  के बारे में कबीर कह गए हैं –
  'बुरा जो देखन मैं चल्या बुरा न मिलिया कोय
  जो दिल खोजा आपना मुझसा बुरा न कोय।'

- स्वधर्म का पालन न करने से तुम्हारी हालत
  जल बिन मछली की सी ही रहने वाली है
- और मनुष्य का सबसे बड़ा स्वधर्म है 'तेन त्यक्तेन भुंजीथा'
- जो भोजन तुम्हारे पास है, वह ईश्वर का दिया हुआ है
- पहला निवाला दूसरों के मुंह में डालोगे
- और अपने निवाले की फिकर नहीं करोगे
- तो मां अन्नपूर्णा को फिकर लग जाएगी
  अपने इस सपूत के मुंह में निवाला देने की
- पहला निवाला दूसरों के मुंह में, फिर अपने मुंह में डालने से
  वह प्रसाद बन जाएगा और परम पुष्टि प्रदान करेगा
  श्रेय के मार्ग पर चलने के लिए
- ऐसे मनुष्य को स्वर्ग की सीढ़ी भी दिखती है तथा
  गहन आत्मसंतोष का अनुभव भी होता है
- पर जो केवल अपने निवाले की फिकर में उलझा हुआ है
  उसकी हालत तो जल बिन मछली की सी ही रहने वाली है
- यदि तुम्हारी हालत ऐसी ही है तो उसकी दवा है –
  अपनी चिंता छोड़ कर थोड़ा बहुत दूसरों के दुखों में भी
  काम आओ।

- एक बार अच्छा काम कर लो
- तो उसके फिर करने की संभावना बन जाती है
- और फिर वह एक दिन हमारी आदत बन सकती है
- एक बार बुरा काम कर लो
- तो फिर उसके कई बार करने की संभावना बन जाती है
- आदत तो पड़ ही जाएगी
- बुरी आदत यानी घोर कष्ट
- अच्छी आदत यानी सुख, महान सुख
- कष्ट पाना है तो एक बार बुरा कर
- सुख पाना है तो एक बार अच्छा कर।

- विपत्ति में दुनिया अधिक से अधिक सहानुभूति के दो शब्द बतियाकर छोड़ देती है
- फिर तो अपना प्रारब्ध और अपना पुरुषार्थ ही काम आता है।

- किसी से कुछ लेने के पहले उस व्यक्ति की ओर देख लो
- कारण यह निश्चित है कि उस चीज के माध्यम से उस देने वाले की प्रकृति हम तक पहुंचने वाली है
- साधु संत गाया करते हैं- 'कुछ लेना न देना मगन रहना'
- वह चीज हमारे पास आकर उस व्यक्ति की याद दिलाया करेगी
- और वह याद हमारे मन को उससे जुड़वाएगी
- और इस प्रकार हम उस व्यक्ति के गुण-धर्म अपनाएंगे
- इसलिए सात्विक, सदाचारी तथा गुणी व्यक्तियों के पास से ही कुछ लेना चाहिए
- अन्यथा नहीं।

- यह संसार एक सराय है
- इस सराय पर तुमको प्रारब्ध पहुंचा गया है
- और एक दिन वह तुमको अचानक लेने भी पहुंचने वाला है
- पैसा भी वही पटा गया है, कितने दिन का पता नहीं
- बहुत से लोग सराय में ठहरे हुए हैं और सबको वही छोड़ गया है
- अलग-अलग लोगों को वह अलग-अलग ले जाने वाला है, अलग-अलग दिन
- अब ऐसी सराय में ठहरे लोगों से क्या मेल मुहब्बत करना
- बिछोह तो अवश्य होना ही है।

- विवेकरूपी मित्र का हाथ जब हाथ में रहता है
- तो मन बड़ा प्रसन्न रहता है
- सुरक्षा का तगड़ा अहसास बना रहता है
- और मार्ग स्पष्ट दिखता रहता है
- इसलिए जब अप्रसन्नता का भाव हो,
  असुरक्षा लगे
- तो समझ लेना कि विवेक का हाथ छूट गया है
- तब तुरंत स्वाध्याय, मनन, आहार-विहार संयम
  तथा सत्संग प्राप्ति में जुट जाओ
- विवेकरूपी मित्र दिखने लग जाएगा
- मुस्कुरा कर तुम्हारा हाथ पकड़ लेगा
- और तब मन अनायास ही गा उठेगा –
  'जब गुरु खड़े हैं पास मेरे, फिर आस करूं किसकी-किसकी।'

- ओ अभागे
- रो मत
- मर मत
- अपने आपको ही ठहाके लगाकर हंसते
  और खुशी से झूमता देखना चाहते हो तो
- थोड़ा धैर्य रख
- थोड़ा-सा रुक जा
- थोड़ा-सा समय बीत जाने दे
- समय बलवान है
- वही रुलाता और वही हंसाता है
- और यह बात समझ में आ गई
- तब फिर हंसने-रोने से दूर
  केवल एक स्मित हास्य ही तेरे चेहरे पर बिखरा रहेगा।

- किसी को भी अपना मत मानो
- दिल पर घाव लगने बंद हो जाएंगे
- जितना हो सके दूसरों का भला करते चलो
- रिसते घाव भर जाएंगे
- इस प्रकार बस चलते चलो, चलते चलो
- एक दिन तुम परम पुष्टि तथा परम तुष्टि को प्राप्त हो जाओगे।

- वर्तमान में मन को गड़ा दो
- फिर देखो कि क्या-क्या सामने आ रहा है
- धैर्य को अपनाओ, विवेक को साथ रखो
- ये दोनों साथ रहें तो क्या करना चाहिए, इसका फैसला ऊपर से आएगा
- और अधीर हो गए तो फैसला खुद करना होगा
- धीरज धरे रहे तो देखोगे कि एक-ब-एक कदम एक ओर उठ रहे हैं
- बस तेरा काम बचा रहता है, उसका भी द्रष्टा बने रहना!

- हर आदमी अपनी उलझन को सुलझाने में ही दिन-रात पूरे कर रहा है
- वह तुम्हारी क्या मदद कर सकता है
- वह तो शायद तुमसे ही मदद की आशा लगाए बैठा रहता है और क्रोध करता है
- अपनी समस्या अपने को ही सुलझानी होगी
- आत्मविश्वास जगाना होगा।

- दुनिया से जो क्रोध और उपेक्षा मिल रही है
- वह तुम्हारा पुराना पावना है, प्रारब्ध ने केवल माध्यम चुने हैं
- उनको तो लेना ही होगा, उसमें बेईमानी कैसी?
- और यदि प्रत्याशा छोड़ कर प्रेम और सेवा देते चलते हो
- तब तो फिर इहलोक और परलोक दोनों ही सुधर जाएंगे
- परम शांति का लाभ भी होगा
- इसमें नहीं समझने की क्या बात है भाई मेरे!

- जो आदमी बदला लेता है
  जो बदला लेने की सोचता है
- वह अपनी अमूल्य शक्तियों को बरबाद
  कर रहा होता है
- उसका अपना विकास बंद हो जाता है।

- जब बुरे दिन आते हैं
  तो सारी चीजें उलटी पड़ने लग जाती हैं
- जब अच्छे दिन लौटकर आते हैं तो सारी
  चीजें सुलटी पड़ने लग जाती हैं
- अच्छे और बुरे दिन प्रारब्धवश आते हैं
  और चले भी जाते हैं!
- चीजें उलटी पड़ें तो अपने को दोष मत दे
- और चीजें सुलटी पड़ने लगे तो अपनी पीठ भी न ठोक
- ये सब बाजीगर प्रारब्ध का एक तमाशा मात्र है।

- इस भ्रम में मत रहना कि कोई
  तुम्हारा कल्याण कर देगा
- तुमको अपना कल्याण स्वयं ही करना होगा।
- अन्यथा अकल्याण ही होगा
- आज और आज का पुरुषार्थ तथा आज और
  आज की तपस्या ही कल्याणकारी होती है
- कारण, हर कल चुनौती भरा होने वाला है।

- सबसे बड़ा बल है सही विचार
- और सबसे बड़ा साधन है स्वस्थ शरीर
- ये मनुष्य के सबसे बड़े संबल और साधन हैं
- इन दोनों का संयोग मरणधर्मा मनुष्य को
  अमरत्व के उस शिखर पर पहुंचा सकता है
- जहां उसके दिल की हर धड़कन बोलती है –
  'अहम् ब्रह्मास्मि, अहम् ब्रह्मास्मि, अहम् ब्रह्मास्मि।'

- दुनिया को तो वह
  बादशाह ही खरीद सकता है
- जिसने दो मीठे बोल बोलने की
  कला हासिल कर ली है!

- निराशा और निर-आशा में फर्क है
- निराशा आदमी को मार डालती है
  निष्प्राण-सा कर डालती है
- और निर-आशा को साथ लिए जो आदमी चलता है
  उसकी आंतरिक शक्ति का अवश्यमेव जागरण होता है
- बुद्धिमान व्यक्ति निर-आशा को अपनी सहचरी
  बना कर रखते ही हैं
- जिससे निराशा रूपी राक्षसी उनके पास तक न फटकने पाए।

- जो आदमी गलती होने पर
  अपनी गलती स्वीकार नहीं करता
- वह धीरे-धीरे लोगों में अप्रिय होता चला जाता है
- तथा जो सहज-सरल भाव से अपनी
  गलती स्वीकार कर लेता है
- उसे दुनिया अपना प्यारा बना लेती है।

- यदि तुम किसी के दुख में साथ देते हो
- तो तुम ईश्वरीय आशीर्वाद के हकदार बनते हो
- वह आशीर्वाद तुम्हें शक्ति देगा
- यदि तुम अपना सुख बांटते हो
  तो तुम्हारा सुख कई गुना हो जाएगा
- इसलिए यदि सुख बढ़ाना चाहो, शक्ति बढ़ाना चाहो
- तो अपना सुख तथा दूसरों का दुख बांटो।

- अपने लिए गड्ढा खोदा नहीं जाता
- आदमी प्यासा ही रहता है
- गड्ढा खोद दूसरों के लिए
- पिला पानी दूसरों को
- इसी बहाने तुम्हारी प्यास तो जरूर ही मिट जाएगी।

- 'बिन मांगे मोती मिले मांगे मिले न भीख'
- आशीर्वाद भी मांगने से नहीं मिलता
- पात्रता होने से अपने आप झोली में आ गिरता है
- आशीर्वाद चाहिए तो बस एक ही काम करते चलो
- अपनी पात्रता बढ़ाते जाओ
- नहीं तो आशीर्वाद समाएगा कहां?
- लुटिया में कहीं गंगा समाती है?
- वह तो भागीरथ की पात्रता है
  जिसके कारण गंगा जी को भी धरा पर उतरना पड़ता है।

- भोग-भोग कर दुनिया शांति पाने
  की चेष्टा में लगी है
- दुनिया को यह पता होना चाहिए कि शांति
  भोग भोगने से नहीं भोग के त्याग से ही संभव है
- तथा इस दुनिया में शान्ति से बड़ी कोई
  उपलब्धि नहीं है।

- जितना बड़ा त्याग उतना बड़ा सुख
- संचय में कष्ट है
  श्रम है और भय है
- भोग में थकान है, निराशा है
  अंतहीन पुनरावृत्ति है
  तथा पुनर्जन्म के बीज निहित हैं
- अतएव त्याग प्रथम साधना है साधु की
- त्याग प्रथम साधना है साधक की।

- ईश्वर हमें जिस परिस्थिति से गुजार रहे हैं
- वह हमें पाठ पढ़ा रही है संयम का, धैर्य का
- वह हमें पाठ पढ़ा रही है कि तू तेरी मर्जी को
  उसकी मर्जी के सामने गला कर रख दे
- वह हमें पाठ पढ़ा रही है –
  'मेरी चाही मत करो मैं मूरख अज्ञान
  तेरी चाही में प्रभो है मेरा कल्याण'
- मेरी चाही तो कदमों में जैसे
  मन - मन भर के पत्थर बांध देती है
- मेरी चाही कुछ नहीं
  तो फिर कदम हल्के और यात्रा सहज
- कबीर दास ने कहा है-
  'चाह गयी चिंता मिटी मनवा बेपरवाह
  जिसको कछु न चाहिए वो है शाहंशाह।'

- मनुष्य का भविष्य इस बात पर निर्भर करता है कि
  कैसे आदमियों को उसने भावना दे रखी है
- यदि हमने साधारण ओछे आदमियों को अपनी भावना
  दे रखी है तो निश्चित ही हम कष्ट पाने वाले हैं
- और यदि हमने यह श्रेष्ठ मनुष्यों को दे रखी है
  तो हमारे जीवन में सुख-शक्ति की वृद्धि होने ही वाली है।

- यदि कोई आदमी तुम्हारे मन लायक
  बात नहीं बोल रहा है या काम नहीं कर रहा है
- तो फिर यह हो सकता है कि या तो तुम
  गलत हो या वह गलत है
- यदि तुम गलत हो तो अपने को सुधारो
- यदि वह गलत है तो इसका मतलब उसमें
  या तो शक्ति की कमी है या समझ की कमी है
- अब नासमझ या दुर्बल पर क्या क्रोध करना?
- अपना काम करते जाना चाहिए।

- जो गंगा बह गई
- उसकी ओर जो व्यक्ति देखता रहता है
- वह प्यासा और अतृप्त ही रहता है
- कारण अभी जो बह रही है
  उसको वह भूला हुआ है!

- विवेकरूपी दीपक के प्रकाश में ही शक्ति
  देवीरूपा होती है
- अन्यथा विवेकरूपी दीपक के बुझने पर तो शक्ति
  कृत्यारूपी ताड़का और पूतना बन जाती है
- सत्संग-स्वाध्याय, मनन और आहार-संयम के संयोजन
  से विवेकरूपी दीपक को जलाए रखना, अरे मुमुक्षु!
- अन्यथा विवेकहीन शक्ति-साधना तुम्हें
  कहीं रावण या दुर्योधन न बना डाले
- हर कदम यह पाए कि विवेक दीपक जल रहा है
- अन्यथा चाल उलटी हो जाएगी।

- यदि कोई आदमी रो रहा है
- तो यह मत समझना कि वह तुम्हारे सताये रो रहा है
- वह अपने प्रारब्ध के चलते रो रहा है
- तुम उसे कितना चुप करा सकते हो
- उसे ज्यादा चुप कराने के प्रयास में संभव है
  तुम भी रोने बैठ जाओगे
- और शक्ति खो बैठोगे
- मनुष्य का असली धन है उसकी शक्ति
- उसका ज्ञान
- उसकी रक्षा
- तथा उसकी वृद्धि उसका मुख्य कर्तव्य है
- इस बात का हर समय ध्यान बना रहना चाहिए।

- भोग और योग एक साथ नहीं चल सकते
- भोगी, योगी नहीं बन सकता
  तथा जो योगी है वह भोगी भला कैसे हो सकता है
- अतएव योग मार्ग पर चलने के
  इच्छुक व्यक्ति को भोगों का त्याग करना ही होगा
- उसे त्यागी बनना ही होगा
- त्याग के बिना योग सधेगा नहीं।

- धन के घमंड में लोग फूले नहीं समाते
- पर सच तो यह है कि धन लोगों की आखों में
  धूल झोंक कर, उनको बार-बार पुनर्जन्म के चक्कर
  में डाल कर, उनको बार-बार मिट्टी में मिलाता है
- और इस प्रकार उनकी मिट्टी पलीद करता है
- फिर भी लोग नहीं समझते
- नहीं थकते
- और बार-बार उसी भूल को दुहराये चले जाते हैं।

- सफलता और सम्मान में प्रवृत्ति के बीज छुपे हैं
- और प्रवृत्तिरत मनुष्य अपने जाते दिन तथा आती मौत
  को नहीं देख पाता
- इसलिए साधु सफलता और सम्मान को
  हेय की दृष्टि से देखता है

- महाभारत के युद्ध के लिए कुरुक्षेत्र जाने की
  आवश्यकता नहीं है
- विजेता, सूरमा बनने के लिए भी
  कुरुक्षेत्र जाने की आवश्यकता नहीं है
- तुम्हारे शत्रु तुम्हारे अन्दर हैं
- यदि विश्व विजय करना चाहते हो
  और हिमालय की चोटियों पर पताका फहराना चाहते हो
- तो अपने अंदर के इन शत्रुओं को जीत कर दिखाओ
- और ये शत्रु हैं तुम्हारी ऊधम मचाती इन्द्रियाँ,
  तुम्हारी बेलगाम इन्द्रियाँ
- जिनको तुमने बिगाड़ कर अपने सिर पर बैठा लिया है।

- त्वरापूर्वक चलते-चलते एक दिन शरीर को अग्नि की लपटों में झोंककर आगे बढ़ जाना है
- ऐसा यात्री क्या अगल-बगल देखेगा
- क्या ऊपर-नीचे देखेगा
- उसके मन में तो बस वही अग्नि की लपटे कौंधती रहती हैं।

- संघर्ष का समय उपस्थित होने पर घबराकर मदद के लिए मत भागो
- बल्कि संघर्ष में जुट जाओ
- यही एक तरीका है सफलता का
- अपने आस-पास सबको बुलाने का
- यहां तक कि दैवी कृपा को भी उतारने का।

- संसारी और मुमुक्षु में कोई झगड़ा नहीं है
- वरन अच्छा-खासा प्रेम रहता है
- कारण, मुमुक्षु त्याग करना चाहता है
- और संसारी संचय और भोग
- आदान-प्रदान अच्छा चलता है तथा प्रेम बना रहता है
- इसलिए खांटी मुमुक्षु को संसार दांतों के बीच एक नरम जीभ की तरह रखता है
- मेहनत करना संसार का काम, स्वाद लेना मुमुक्षु का काम
- 'अजगर करे न चाकरी, पंक्षी करे न काम दास मलूका कह गए सब के दाता राम।'

- संसारी पकड़ने में विश्वास करता है
- मुमुक्षु छोड़ने में
- संसारी पकड़-पकड़ एक-एक ईंट जोड़कर एक-एक पैसा जोड़-तोड़ कर अपने चारों ओर एक घेरा बनाता है, अपनी समझ में एक सुरक्षा का संसार बनाता है
- वही घेरा उसके दिल को घुटाता रहता है
- मुमुक्षु को तो छोड़ने की प्रक्रिया बरकरार रखनी है
- कारण, छोड़ते-छोड़ते ही तो वह आत्मा के धरातल पर पांव रख पाएगा
- जहां असीम सुरक्षा, अनंत आनन्द और परमतृप्ति का साम्राज्य फैला है
- भला इस लोभ को वह कैसे छोड़े।

- इन्द्रिय-संयम और मन की शांति का चोली-दामन का संबंध है
- जितना बड़ा इन्द्रिय-संयम, उतना मन शांत हुआ समझो
- उतना ही हम आत्म-साक्षात्कार के करीब हैं, ऐसा समझो
- इसलिए मोक्षाभिलाषी पुरुषों को पूरी-पूरी चेष्टा करके इन्द्रिय-संयम की साधना करनी चाहिए।

- मंच पर नाचती कठपुतलियों से क्या हम कुछ आशा रखते हैं
- कुछ नहीं
- केवल वे हमारा मनोरंजन भर कर रही होती हैं
- उसी प्रकार इस संसार मंच पर नाचते मानव समूह से कुछ भी आशा रखना कितना ठीक होगा
- समझ लो उनकी डोर भी ऊपर से ही संचालित हो रही है
- और वे हमारा मनोरंजन मात्र कर रही हैं।

- मुमुक्षु को संसार में कोई स्थिति नहीं प्राप्त करनी
- संसार में तो उसे दिन पूरे करने हैं
- स्थिति तो उसे आत्म संसार में प्राप्त करनी है
- उसके लिए उसे त्याग का रास्ता अपनाना होगा
- विवेक को हर समय साथ रखना होगा।

- स्वादिष्ट भोजन और नारी सुख की कामना
  मनुष्य करता है
- इनके पीछे पड़ कर पता नहीं
  मनुष्य कितना सुख पाता है?
- पर बंधन में तो पड़ ही जाता है
- जीवन पर्यन्त उसे यह सुख
  मृगमरीचिका की तरह भटकाता है
- शायद कई-कई जीवन
- इसलिए इनके त्याग में ही सुख है
- मुक्ति है।

- एक रोता, उदासी भरा मुखड़ा
  मनुष्य की आत्मा का हनन करता है
- तथा वह लोगों में अप्रिय भी हो जाता है
- अतएव सुखद संसार यात्रा तथा आध्यात्मिक प्रगति के लिए
  मनुष्य को प्रयास करके प्रसन्नवदन रहना चाहिए।

- एक कदम उठा
- डर मत, रुक मत, झिझक मत
- काल शरीर को चिता की लकड़ियों तक
  खींचे लिए जा रहा है, हर क्षण, हर पल
- तेरे शरीर को कंधे पर लादे उसके कदम
  तो उठ रहे हैं हर दिन, हर पल
- इस बोझ को तो उसे ही उठाने दे
- और हल्का होकर हंस भाई मेरे!
- पर लगा मन को अब तेरे इष्ट पर
- कारण, काल का जवाब तो उसी के पास है
- कारण, चिता की जलती तपिश का जवाब तो उसी के पास है।

- जमीन के एक टुकड़े पर खड़ा इंसान
  ईंट को छाती से लगाकर भीत मन से
  चारों ओर देख रहा है
- कि कहीं कोई उसे जमीन के इस टुकड़े पर
  से न भगा दे
- कि कहीं कोई उसकी ईंट न छीन ले
- हाय रे मानव, हाय रे प्राणी
- जो विधाता तुझे यहां लाया है,
- उसने तेरे लिए सारी व्यवस्था कर रखी है
- ताकि तू भूखा न सोए, नंगा न रहे
- और तेरे सिर पर एक साया भी रहे
- फिर क्यों भला इतनी चिंता!
  फिर क्यों भला इतनी कंपन!

- त्यागी व्यक्ति को ईश्वर का प्यार तथा
  दुनिया से सम्मान मिलता है
- तथा सम्मान की भूख से परे त्यागी व्यक्ति
  संतोषामृत से परिपूर्ण रहता है
- जबकि संचयी और भोगी व्यक्ति के गले
  दीनता ही लगी रहती है।

- दो गज जमीन का एक घेरा बना कर आदमी
  अपने को बड़ा सौभाग्यशाली और सुरक्षित समझता है
- इस संसार में अपने जीवन को
  कभी न शेष होने वाला समझता हुआ
  बस मनसूबे बांधता ही रहता है
- कि सहसा एक दिन उसे मृत्यु आ दबोचती है
- हाय रे मानव, अब भी चेत!
- हाय रे मानव, अब भी समझ!
- हाय रे मानव, अब भी डर!

- यदि कोई तुम्हारी प्रशंसा करता है तो
  यह समझना कि वह आदमी ही अच्छा है
- तुम फूल कर कुप्पा मत हो जाना
- यदि कोई तुम्हारी बुराई करता है तो तुम यह समझना
  कि वह तुम्हारा बहुत बड़ा हितैषी है
- कबीर कह गए हैं-
  'निंदक नियरे राखिये आंगन कुटी छवाय'
- तुम्हारी बुराई की चर्चा करके वह उस
  बुराई की सफाई करने के प्रयास में लगा है!

- अपनी ही पीठ पर अपने ही हाथों से
  धौल जमा कर आगे बढ़ो
- रुको मत
- चलते रहो, चलते रहो
- अब क्या करना, अब क्या करना
- केवल इतना ही सोचना
- और बस करते जाना
- यही सुखी होने का मूलमंत्र है।

- भोगों के भोग में थोड़ा-सुख तो है
- लेकिन थकान, भय और अतृप्ति शीघ्र ही मनुष्य
  के साथ जुड़ जाते हैं
- भोगों के त्याग में एक बार कष्ट तो होता है
- पर बाद में उस त्याग के फलस्वरुप मनुष्य
  को सुख-शांति की अनुभूति होती है
- जो मनुष्य को परमतृप्ति के परम अनुभव तक पहुंचाती है।

- संसार का कोई भी कृत्य मनुष्य को
  तृप्ति नहीं दे सकता
- संसार की कोई भी स्थिति मनुष्य को
  सुरक्षा नहीं दे सकती
- त्याग और संतोष ही मनुष्य को तृप्ति
  और सुरक्षा के तीर पर पहुंचा कर
  परमानंद के समुद्र में डुबा दे सकते हैं
- अतः तू त्याग ही करता चल,
  अपने उर में संतोष ही धारण किए रह।

- यह कहना कि
- मैं अपने जीवन में जो पाना-करना चाहता हूँ,
  उसके मार्ग में अमुक-अमुक आदमी बाधक बन रहा है
- अपनी असमर्थता को ढकने का
  अच्छा बहाना है
- अपनी दुर्बल इच्छा-शक्ति को छुपाने का
  बड़ा सुंदर तरीका है
- दूसरों को दोष देना तो दे छोड़
- विवेक को कर जाग्रत
- और ठंडे दिमाग से सोच
  कि क्या प्राप्त करने लायक है इस जीवन में
- और फिर जुट जा उसको प्राप्त करने में।

- तू जहां रखेगा वही मेरा घर
- न लंगोटी की, न खटिया की, न रोटी की फिकर
- बस तेरी चाकरी करते जाना है
- दो रोटी से ज्यादा की फिकर करूं तो बेईमान
- और खटिया की चिंता करूं तो अश्रद्धालु।

- संसार में तुम्हें कुछ करना नहीं है
- संसार में तुम्हें कुछ पाना नहीं है
- संसार में तुम्हें कुछ बनना नहीं है
- संसार को तो उपेक्षा की दृष्टि से ही देखना है
- हेय–उपादेय कुछ नहीं
- वर्तमान में जो आन पड़े, करते जाना है
- वर्तमान में जो आ पड़े, स्वीकार करते चलना है
- लेकिन ध्यान रहे, विवेक को जगाए रख कर!

- चिदाकाश और भूताकाश में
  चोली-दामन का संबंध है
- एक को कम करने से दूसरा
  कम या क्षीण होता है
- जैसे, अंधेरा जैसे-जैसे क्षीण होता है
  वैसे-वैसे प्रकाश छाता जाता है
- वैसे इनके क्षीण होने से फिर
  चिन्मय आकाश ही बचा रहता है
- भूताकाश कम करता चल ज्ञान योग से
- चिदाकाश कम करता चल राजयोग से।

- आत्मा का त्याग संभव नहीं
- क्या लहर अपने में से जल को निकाल सकती है
- जो भी त्याग होगा वह संसार त्याग ही होगा,
  अतएव शांति लाभ ही कराएगा
- जितना बड़ा त्याग, उतना बड़ा आत्म-लाभ!

- अरे पक्षी! तुम वृक्ष की जिस डाल पर बैठ कर
  अपने आप को सुरक्षित महसूस कर रहे हो
- वह कुछ नहीं, केवल एक छलावा है काल का
  अपने चक्कर को चलाने का
- यदि उस चक्कर से निकलना चाहो
- तो फिर उस डाल को छोड़ने की हिम्मत कर!

- जैसे मरुभूमि में चलता, थका पथिक
  मृग-मरीचिका के जल को अवहेलना की दृष्टि से देखकर
  एक वृक्ष के नीचे बैठ जाता है और तत्पश्चात
  आंखें मूंदकर सुख-शांति का अनुभव करता है
- उसी प्रकार जन्म-जन्मान्तर की यात्रा से थका यह पथिक,
  विवेक प्राप्ति के पश्चात बाह्य-संसार को मृग-मरीचिका के
  जल की तरह असत्य जान कर सुखपूर्वक ध्यान में
  बैठता है और बैठकर परम शांति का अनुभव करता है।

- बिना मांगे जो मिलता है
  वह ईश्वर का भेजा हुआ होता है
- आदमी जब मांगने जाता है तब वह
  ईश्वर से दूर हो जाता है
- इसलिए यदि ईश्वर से दूर होना न चाहो
  तो कभी मांगने मत जाओ।

अधिकारों को छीन लेने से अधिकार तो
मिल जाते हैं पर जीवन जीने के लिए जो
चाहिए वह तभी हो सकता है जब देने
वाला प्रेम से दे। वरना तो जीवन निरन्तर
चलने वाला एक युद्ध स्थल बनकर
रह जाएगा।

- संतोष मन में हो
  तो बूंद में समुद्र समाया है
- और असंतोष हो तो
  समुद्र भी बूंद जैसा लगता है।

VIVEK DRISHTI

- Thinking of the problem will always increase the problem
- Size of the problem may become stupendous and you may not be able to handle it then
- The mind sees a GHOST in a stump
- The best solution is not to think of the problem
- And take a small step with your available energy and wisdom in the direction of solving the problem
- Soon you will find the problem disappearing
- The thought of the problem is always much worse than the problem itself.

- WAIT Patiently
- Do not reach out (मांगने जाना)
- Let Destiny (Prarabdha) reach you
- And give you
- What is due to you.

- Just stare at the PATH right in front of you (टकटकी लगाकर देखना)
- Take one step at a time
- One day you will come to feel that HE is holding your hand
- Progressively you will realise that HE is making you take the step प्रेरित करना
- And Lo देखो
- One day you will find, HE himself is there taking the steps.

- Ask yourself
- How are you worse off
- Be honest in answering
- And every 'Seeming Worse' will drop then.

- Future is a huge burden
- That we can not carry
- It is so heavy that it can crush us
- It is light like a feather once we do not think about it पंख
- The Load of every present moment is always manageable. बोझ

- A greedy man is avoided by all
- A non-greedy man is liked by all
- A Karma Yogi (selfless worker) is loved by all
- A saint is Worshipped by all.

- Life is a folly of happiness & suffering
- Man is unable to withdraw himself and check his indulgences
- Mind is the slayer. Mind is the saviour
- Those who indulged were slain
- Those who restrained were saved and attained ultimate peace
- Progress is a slow process
- A tortoise reaches the goal by the practice of RESTRAINT and consistent diligence
- And the hare lost because of his indulgences.

- To have expectations
- Is misunderstanding
- Having No expectation
- Is Right Understanding
- Misunderstanding gives sufferings
- Right understanding always bestows PEACE.

- The First need of Spirituality is Detachment
- Attachment will bring misery today or tomorrow
- Practise and achieve detachment and become free
- Then only you are entitled to enter the realm of spirituality
- Then only you can enjoy living in the world and grow spiritually as well
- Like a Lotus Flower
- Like a boat which is on the water
- But the water is not in it.

- A gloomy and inactive man is his worst enemy
- A cheerful and active man is his best friend
- The WORLD is the best friend of ONE
- Who is cheerful and active.

- You have to own yourself
- No one will own you
- Never be in an illusion that anybody will own you
- This is a dangerous illusion
- Because when that illusion breaks which is bound to, it will break your heart
- And a life with a broken heart is worse than death.

- Do not try to hold anyone
- In the act of holding anyone, you will be bound
- Everyone is born free from you
- If you think so and if you act so
- You will then only be free
- To progress spiritually.

- 'Who am I'
- Is the perennial question
- One has to be on the quest every moment to know this
- Basic observances are
- No one is MINE
- Nothing is MINE
- When all the 'MINE' drop from the mind
- Then only the real 'I' is experienced.

- If you are not striving now
- You will never find yourself striving
- And without striving, LIFE will slip by
- Barrenly
- So NOW or NEVER.

- If you are weak
- The world will pounce on you
- Like crows on a weak and falling animal
- You will be eaten and done with soon
- Never become weak
- Never even show weakness
- Keep moving with determination and purpose till you
- Drop Dead
- Not even half dead.

- Never Promise
- If you promise
- Then take very special care to keep it
- Else you will find the whole world against you
- ONE DAY.

- If you happen to be loosing something
- Do not grieve
- This is an illusory feeling
- You will surely get something more precious on the way
- Keep walking, keep walking
- In spiritual realm life is always destined to be richer and richer and never poorer and poorer
- This is the DIVINE LAW.

- The best house to live is the body
- The best friend to live with is the mind
- If they are OK, you are in heaven
- If they are not OK, you are in Hell
- So create your own Heaven by Hath Yoga, Karma Yoga and Ahara Yoga.

- Mind for its own security plans future
- But spirit is the casualty in providing such security to the mind
- Seekers of TRUTH
- For absolute Security
- Live totally
- In the PRESENT MOMENT
- There lies absolute security
- There lies total peace
- That is the gateway to bliss.

- In worldly life results are quantified not efforts
- Milestones are eagerly awaited and acknowledged
- But in spiritual life, efforts are quantified not results
- For miles and miles there are no milestones
- And no milestones till you reach the goal
- LIFE of world is Result oriented
- But life of spirit is Effort oriented
- For Upanishads declare very clearly 'Keep mov ing', 'keep moving'. And also say that anything and everything experienced on the way
- Is to be ignored by saying, 'This is not IT, This is not IT'.

- So long a man does not reach the destination
- He has to keep walking
- So long the river does not reach the sea
- It keeps flowing
- Similarly in LIFE
- One has to keep on working and working
- Till the centre of No working is reached
- Where even amidst the battle field fighting wars like Arjun, enriched by the message of KarmaYoga
- Could raise his hands to the sky
- And exclaim !
- I am not the doer : HE IS THE DOER - NAY HE ALONE IS THE DOER

- If you start reflecting on
- What the other is thinking or doing
- You may then be reacting
- Ignore what the other is thinking or doing
- Disconnect your mind from the thoughts and actions of others
- Create your own flow of right thinking by Satsang and Study
- Then only you will be able to act and not react
- And then only you will be free
- And grow in humanity
- And also in spirituality.

- Ignorants feel negative even in positive situations
- Wise people surely feel positive in positive situations
- Only spiritual people feel very positive even in extreme negative situations
- For them those situations are tests and trials for their faith, solidarity and conviction
- They strengthen them
- And basking in these hardships, with shining face and gleaming eyes
- They exclaim !
- O GOD
- YOU ARE SO KIND TO ME
- YOU HAVE KEPT ME SO CLOSE TO YOU.

- Significance in the world is like a line drawn on the surface of water
- What is its VALUE
- What is its DURATION.

- You will soon find the world joining you in your battle
- If you start your own battle
- Without looking back, looking around or waiting
- And also starting one's own battle without expectation
- Is the best invitation to DIVINITY or GRACE to descend.

- The mind craves to extrovert and indulge
- In restraining the mind there is suffering
- Well have extroversion and indulgence
- There is suffering in that too
- The fear, insecurity and sense of unfulfillment deepens
- Which to select?
- RESTRAINT and INVOLUTION
- OR EXTROVERSION and Indulgence
- In restraint you have to handle yourself
- In extroversion you have to handle the world
- It is surely possible to handle oneself with some effort
- But it is nearly impossible to handle the world
- So peace lies in Restraint and Yoking yourself with the inner world.

- You know it or not
- But the fact is that precious knowledge
- And sufferings are companions
- But suffering surely departs soon
- And leaves behind the precious knowledge as a GIFT
- And nothing is higher than knowledge
- Hence suffering is a Friend
- A blessing in disguise
- A BOON
- Which gives us precious GIFTS
- And this only is the right understanding about suffering.

- Do not try to change the nature of others
- The effort will only disappoint you
- May even hurt you
- And will distract you from your path (ध्यान भंग करना)
- Better is to leave them to their destiny भाग्य
- Rather do your utmost to improve your own nature
- That is one thing that should be attempted sincerely
- And this is the best effort to help change others around you
- Practise of YOGA, Right diet, study, contemplation and company of wise people all these improve our nature ध्यान करना
- Assimilate as much as is possible. आत्मसात करना

- Keep on giving
- In the process
- You will get
- What you need.

- YOUR LOVE or FAITH Should always be a secret
- This is the law of its survival विद्यमानता
- Knowing that, the world will try to destroy it
- And that will be your greatest loss
- Because the world is jealous of LOVE and FAITH
- History is full of examples
- Look at the lives of JESUS, MEERA, SOCRATES and GANDHI
- If you possess that strength गुप्त करना
- Then only take a chance.

- A wise man is a beautiful combination of effort and acceptance
- He is like a tender twig
- In the situation of storm it bends easily
- But raises its head HIGH
- With a shining dew drop on head
- To kiss the bright SUN too.

- Every suffering shakes the STUPID, DULL and Indulgent mind
- And purges the undesirable impurities from within
- And is a blessing and kindness of the DIVINE
- Registering the passing of a milestone
- Bestowing accelerated spiritual progress.

- Pain as a companion
- Will transform you
- From Undesirable
- To Desirable.

- Sometimes LIFE carries on by itself
- And sometimes you have to carry it on you
- The latter situation is more common than the former
- If you carry it on you then one day it will carry on by itself also
- The former is JOY
- The latter is Effort
- Effort leads to Joy.

- The moment you think of the past or of the Future
- You are doing injustice to the Present
- And if you are doing injustice to the present
- Then how can you expect a bright future.

- There is some happiness and some suffering in possessing and indulging in the world
- And there is considerable effort in renouncing it also
- The effort for renunciation is worthwhile and will build you up 'O' Aspirant
- But possession and indulgence will destroy the rest of you 'O' Aspirant
- Always remember this truth very carefully
- Time lost in indulgence will not come back to you 'O' Aspirant
- And TIME is but LIFE only.

- To make the best of Today
- Is the secret of Success in Life
- But to make the best of now
- Is the secret of making the best of today.

- O Mind!
- Do not leave the sweet and secure present moment
- You will face
- GRIEF
- And FACE FEAR
- If you at all leave it.

- Life here is a journey
- And this world is not your home where you have come to live forever
- As in a Journey you part with things and people and keep on moving
- Similarly here too, you will have to part with your dear ones, health, wealth and everything you perceive
- Do not try to hold them when they tend to part
- Else you will be a victim of suffering
- Let them go their way for every form has to part and has a way to traverse
- And you traverse your way
- This is necessary to achieve freedom of mind and enter the realm of spirit.

- Any thought of the past and of the future
- Is just 'EGO' only
- That Dethrones us from the Throne of SELF.

- So long the awareness is lurking outside and seeking
- You will continue to be restless, insecure and unfulfilled
- For stability, security and fulfilment, the rope of awareness is to be directed within and tied to the inner Anchor
- As a drifting boat is stabilized and secured soon it is tied to the Anchor
- And no amount of strong currents can drift it astray
- Similarly the process of Japa, meditation and AWARENESS directed to the inner anchor
- Bestows stability of MERU mountain, security of the Nectar and fulfilment of the bosom of the Beloved
- Know thyself that there is no comparison.

- When I found the world slithering away from my grip
- My heart was broken and I cried and cried and was at the brink of extinction
- Right understanding now makes me realize
- How MUCH GOD WAS KIND TO ME
- Right understanding is like nectar
- Hold the hand of Right understanding (VIVEK)
- It will make you walk from utter poverty to supreme riches
- The Hell will be transformed into Heaven
- And the Desert will become an OASIS
- Right Understanding will come by STUDY, CONTEMPLATION and COMMUNICATION with the wise.

- Life is a Flow
- Is a Journey
- Like that of a River Like GANGA
- Which comes out from GOMUKH and reaches Ganga Sagar
- She only knows to flow
- She touches every bank
- But remains untouched
- That is the Law of Flow
- Similarly a Man will find everything existing
- But he remains untouched
- Then only flow is possible
- Every moment is full in itself
- And is unsullied by PAST OR FUTURE
- Like Ganga which has no trace of GOMUKH OR GANGA SAGAR in between
- Every moment is FULL in itself
- And is alive with awareness and ACTION
- There is SHIVA at the substratum of such action
- As is SHIVA at the root of Flowing GANGA
- And this is LIFE
- Life of SATYAM. SHIVAM. SUNDARAM.

- When the storm is there in your LIFE, stand where you are and bend low
- Let the storm pass
- It will pass
- Be rest assured
- Storms do not come often
- When the darkness is there all around and energy is low
- Keep your eyes wide open and try to take one single small step at a time, with your energy and wisdom
- Remember the darkness is not permanent
- It will pass as the dark night passes and the bright day comes
- Do not be depressed. This only denotes cycle of life
- When the path is bright and the energy is high
- Then keep running, keeping your head high in the sky
- All the three situations are bound to come in life
- Life of Nal, Yudhisthir and Harishchandra are but some examples in the pages of our history.

- If you want to be loved by the world or by God
- The rule is one and same
- You have to become SELFLESS
- You have to give your LOVE as much as you can
- You have to serve others as much as you can
- SELFLESSLY and without expectation
- This is the SUREST and SAFEST Yoga
- One day you will find yourself drowned in the love of the world
- And will experience His love too
- Initially it is difficult
- But once you start
- The DIVINE forces will pull you on and on and on
- To the PATH of SUPREME JOY
- And DIVINE BLISS
- SURELY
- SERVICE TO MAN IS SERVICE TO GOD
- Did say Swami Vivekananda.

- So long you keep expecting
- Nothing will happen and you will continue to be dissatisfied
- Keep on pursuing without expectation
- And you will start getting what is good for you
- Expectation is a distraction
- Expectation is a leak in your energy flow
- Expectation turns a lion into a Sheep
- Expectation is a DISHONESTY in the eyes of KARMIC LAW
- Expectation is like a CLOUD which covers BRIGHT SUN
- And so Having No Expectation
- The realized seers kept saying
- LET THY WILL BE DONE
- LET THY WILL BE DONE
- And thus accepting HIS will in totality in their LIVES
- They reached to the point
- Where they exclaimed
- I and my father are one !
- I and my father are one !!

- Like a boomerang
- Our heart throws expectation to a person, to Destiny and to our own selves
- It is never received and reciprocated
- Like boomerangs it come back with force and strike our own heart
- And weaken us.
- So drop this boomerang of expectation
- And when this is dropped
- The Divine gift appears
- Accept it with GRACE
- That will nourish you
- Nay nourish you to SUPER CONTENTMENT.

- Do not worry about man's will
- Always remember
- Only God's will is done.

- Whatever you do
- Do it without expectation
- Then only you will become rich
- If you do anything with expectation
- You will always feel poor
- Richness & Poverty are in mind
- It is a feeling only in the mind
- And holding on to the external will always steal that feeling.

- I tried hard to amass material wealth and fame
- And landed up in poverty of SOUL
- I tried hard to search the love of the World
- And always drew a barren blank
- Now I try to do small things with great love
- And enjoy the deepest sense of contentment.

- To grow in huminity
- And in spirituality
- You don't have to be wealthy
- Or knowledgeable
- Or an impressive speaker
- You have to be just sweet and be of service to people around you.

- The best place is the body to live in
- The best friend is the mind to live with
- The best time is the present moment to live in.

- So you must realise my friend that
- The root cause of your bitterness and depression
- Is EXPECTATION
- You expected from people
- You expected from Destiny
- You expected from your own self
- They all are not in your hands
- They all are in the hands of INVISIBLE forces
- Realise that now and become free and peaceful.

- There is something very precious in you
- About which you are ignorant
- Once you realise that
- You will be lifted in your own eyes
- And in the eyes of the world too
- Ignorance of that makes you feel poor.

- The Destiny will reach you with BOUNTY
- And the whole world too with great Love
- Once you do not expect
- But soon you are under the spell of expectation
- Both Destiny and the World from you shrink away

- Do not hold anyone responsible for your suffering
- This will seal the possibility of your Personality Growth
- All energy will keep leaking in this process
- And you will continue to be a weakling
- If you want to stand on your own TWO FEET
- Stop this mental aberration.

- Do not expect anybody to be better than What He or She is
- This expectation will embitter your life
- And that bitterness will spoil the JOY of your life
- Rather maintain your sweetness
- Rather sustain your sweetness
- Rather maintain your servitude
- Rather sustain your servitude.

- Do not expect others to perform
- Everybody has his own bindings, limitations and momentum of samskaras : CALL IT ANYTHING
- Bear with others
- If you want the world to love you
- And if you want to practise indifference (UPEKSHA)
- Which is a discipline on the path of spirit
- In that case as well expectations are ignored
- In the life of the world, non expectation brings the reward of popularity and love
- And on the path to spirit, realizing the law of Karma, expectations drop from the mind
- In both situation non expectation is very precious human quality
- For one day it flowers and grows into compassion.

- It is easy to pass the test of the world
- But it is very difficult to pass the test of one's own self.

- Do not expect the WORLD to be sympathetic to wards you
- And even if the WORLD is sympathetic towards you
- Let it not touch you
- For that expectation and that touch will weaken you
- And will not awaken your inner dormant power
- So sympathy or expectation of sympathy from the world
- Is like a DRUG
- Which puts your inner power to sleep
- Eliminate this in your life or minimise it for larger gains.

- You have to pay the price for whatever you want to obtain
- You have to abandon something that you are holding for getting something different
- You have to drop the WORLD from your mind if you want to seek the Soul
- Two can not COEXIST together.

- All the equations and arrangements of SECURITY in the World
- FAIL mortals each day
- They are Castle of Cards
- Which crumble every now and then by the puff of wind blown by Destiny
- Wise is one who has no castle
- For he lives in the open under the DIVINE umbrella of Almighty.

- The movement in the realm of WORLD is endless
- You will end, but the mirage of the WORLD will never end
- To slip within the realm of spirit
- Is the act by which we can reach ABODE OF PEACE.

- Seeking and lurking externally and always landing up to disappointments
- Is this entity what is called mind
- The remedy lies
- In one and
  One alone
- And that is contentment
- Nay super contentment.

- There is no one, for whom to fall outside
- Try also to ensure that there is nothing to fall outside
- Restrain and fall inside on the Platform of Self
- There alone is security
- There alone is fulfilment.

- Consign the body to the flames
- And that is all about the story and fate of this body
- Think now, what remains
- Some Ashes, which are flown in the Ganges
- Or, they mingle with the sands of time
- Some work associates, who forget you in less than twenty four hours
- And your karams
- The cluster of which follow you subtly
- So forget the body and the associates of the body
- And concentrate on your Karmas.

- One who expects, invariably reacts
- And one who reacts
- Is a weakling like a tiny reed on the surface of ocean.
- Do not expect
- And be strong
- Like a Sumeru mountain.

- The experience of this EXISTENCE
- Is a fine game of body and spirit
- Those who are playing the game of body
- Are lost for eternity as one is lost in the woods
- And those who have realised the spirit
- Do feel the stability
- As is felt by a person who is stuck to the anchor on the bossom of the sea.

- All is deniable
- Only YOGA is undeniable.

- Do not decide
- Things which are meant to happen will happen
- Irrespective of your decision
- Your decision will come on the way of HIS will
- Just let things happen
- And you be a witness alone
- Your Decision will only separate you from HIM.

- The moment you start expecting
- Know thyself that you have bared
  open your tendermost self to the external
- For the most brutal attack
  of something which is called disappointment
- That attack will be fatal
- And will make you half dead
- Which is worse than death
- Expectation leads to weakness and death only
- Non expectation leads to strength and life only
- So Worship Strength
- By worshiping the Lord of Non expectation
- And World is a good place to train you
  that lesson.

- Any tilt outside leads to weakness
- And any tilt inside leads to strength
- So watch your move now.

- All the Tamas has to be hit
  slowly and brought to Rajas
- All the Rajas has to be expressed and
  exhausted in SEVA
- Let SEVA purify the Ego.
  and rarify it
- All the conclusion of long Study and contemplation
  is that you have to live a life of detachment,
  dispassion practise of SEVA and Sadhana

- World is a Castle of Cards only
- It will surely crumble one day
- So do not rest any hope or expectaticn on that
- Rest in the castle of SELF only
- And that is your ultimate destination, GOAL, Security and abode of fulfilment.

- It is good that the whole world deserts you
- It will awaken your dormant energy then only
- And will then establish the eternal fact in your stupid mind
- That you have come alone, You are alone and you will go alone
- And these realisations are very precious gifts of Destiny.

- Genuinely try to make yourself a better being by all the ways and means known to you
- But then accept the REST OF YOU Gracefully
- That is the only way of SLOW and SURE success
- Else it will be a situation of stagnation only.

- The world will continue to DISAPPOINT YOU.
- Because all expectation of fulfilment and security will only come to a NAUGHT.
- At least cease to expect from WITHOUT now.
- Because that is nothing but Endless, tiresome and fruitless effort.

- A weak man is rejected by ALL
- A weak man is exploited by all
- Even Gods do not Bless a weak man
- Weakness take you to Dark Dungeons, lonliness and Disater
- So never allow yourself to become weak
- Nay even show weakness
- Strength is life weakness is Death.

- Offer Others
- What you have
- Offer but HUMBLY
- If they Accept
- You are lucky
- For you will be richer and richer in the process.

- Worship LIFE
  by worshiping STRENGTH
- And YOGA and Self-giving
- Are the BEST means
- To worship strength and life.

- The journey of the SOUL
  is from Many to ONE
- Dropping many
- And just holding on to ONE
- Is the PATH.